भजन

आठों सागर आठ जिमीं,केल पुल को पार करो
जमुना जी में आ जाओ,झीलना कर सिनगार करो

1– पाटघाट से चल करके, अमृत वन को पार किया
चाँदनी चौंक की शोभा देखी, लाल हरा वृक्ष निहार लिया
सौ सीढ़ियां चढ़ करके, धाम दरवाजा पार करो

2– थंभ अठ्ठाईस चौक को, सुरता से जब पार किया
चौरस चार हवेली है, पांचवी गोल हवेली है
मूलमिलावे में आ जाओ, दर्शन में खो जाओ

3– मूलमिलावे की शोभा को, रूह की नजरों से देखो
पछिम में सिहांसन रंग कंचन, छः डांडे छः पाये हैं
युगल पिया की बैठक तो, रूहों के दिल में है